अध्याय 6

प.विष्णु नारायण भातखण्डे द्वारा निर्मित स्वरलिपि पद्धति

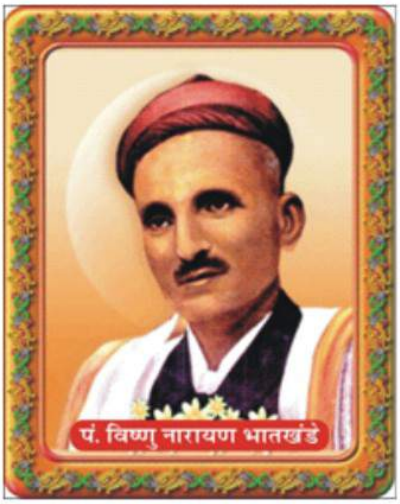

स्वरलिपिः संगीत में किसी गाने की कविता को अथवा साजों पर बजाये जाने वाली गत को स्वर और ताल के साथ जब लिखा जाता है, तब उसे स्वरलिपि (Notation) कहते है।

प्राचीन काल से भारत में संगीत की शिक्षा गुरू–शिष्य परम्परा के अनुसार होती आई है जो आज भी दृष्टि गोचर होती है। उसे समय संगीतकला विशेषतया क्रियात्मक (Practical) रूप में थी अर्थात गुरू मुख से सुनकर ही विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण किया करते थें। उस समय लेखन–प्रणाली व मुद्रण संबंधी सुविधायें उस समय आजकल जैसी न थी।

प्राचीन समय के उस्ताद अपनी काल को अपने पुत्र अथवा विश्वसनीय शिष्यों को भी लिखकर नहीं बताते थे। बल्कि सामने बिठाकर ही सिखाना पसंद करते थें। विभिन्न रागों में सहस्त्रों गीतों को वर्षो तक कंठस्थ रखना एक कटिन साध्य कार्य था। पारम्परिक रचनाओं में भूल होने पर उनका शुद्विकरण गुरू के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं कर सकता था। अतः इस आवश्यकता के देखते हुये पंडित विष्णु ना. भातखण्डे और प. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने स्वरलिपि पद्वति का आविष्कार किया ।

इन दोनों महान विभूतियों ने स्वरलिपि के प्रचार के लिये बहुत प्रयत्न किये। स्व. भातखण्डे जी ने बडे कौशल से अनेक उत्मोत्तम गीतों की स्वरलिपि बनाकर उन चीजों को उदारता पूर्वक प्रकाशित करा दिया, जिससे सर्वसाधारण उनसे खूब लाभ उठा सकें।

20वीं शताब्दी के आरंभ में संगीत जगत के ये 2 महान कलाकारों ने अपने–अपने ढंग से स्वरलिपि की रचना की। पं.वि. नारायण भातखण्डे पद्वति सरल होने के कारण अधिक प्रचलित है।

भातखण्डे स्वरलिपि प्रणाली के निम्नालिखित बिंदु :

1) जिन स्वरों के उपर नीचे कोई चिन्ह नहीं होता । ये मध्य सप्तक के शुद्व स्वर समझे जाते है। जैसे– सारे ग म प
2) जिन स्वरों के नीचे आडी रेखा खींची गई हो, उन्हें कोमल स्वर कहते है। जैसे–रेगघ नि
3) तीव्र मध्यम के पहचान के लिये, म के ऊपर एक खडी लकीर खींची होती है। जैसे–मं
4) स्वर के नीचे बिंदु लगाई गई हो वे स्वर मन्द्र सप्तक के होते है। जैसे– नि़ ध़ प़ म़।

5) स्वर के ऊपर बिंदु लगाई गई हो तो वे ''तार सप्तक'' के स्वर कहलाते है। जैसे– सां रें गं मं।

6) गाने के जिस शब्द से आये अवग्रह चिन्ह ऽऽऽ हो उस शब्द को उतनी की मात्रा बढाकर गाते है। जैसे–श्याऽऽऽ म

7) जिस स्वर के आगे आडी लकीर हो (-) हो उस स्वर को उतनी मात्रा बढाकर गाते है। जैसे रे–ग–म–।

8) कई स्वरों को एक मात्रा में गाने बजाने के लिये इस चिन्ह का प्रयोग होता है। जैसे प म ग अथवा रे ग म प।

9) स्वर के ऊपर अर्धचन्द्राकार चिन्ह को मींड कहते है। जैसे म प ध निं अर्थात यहॉ पर म से निषाद तक मीडं ली जायेगी।

10) किसी स्वर के ऊपर कोई स्वर दिया हो, तो उसे कण स्वर समझना चाहिये जैसे $\overset{प}{\underset{घ}{नि}}$ प।

11) जो स्वर कोष्ठक में बंद हो उसे मुर्की से गाना होता है। जैसे (म) अर्थात प मगम

ताल पक्ष को समझने के चिन्ह

ताल में सम दिखाने का चिन्ह (निशान) (x) होता है।

खाली को दर्शाने के लिये चिन्ह (o) होता है।

सम को पहली ताली मानकर अन्य तालियों के लिये क्रमशः 2, 3, 4 आदि संख्यायें लगाये जाते है। अन्य विभाग के लिये। जैसे–

धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	ति	ता	ता	धिं	धिं	धा
X				2				0				3			

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. स्वरलिपि क्या है। इसका परिचय देते हुये इसके आविष्कारक कौन है, नाम बताइये।
2. हमारे भारतीय संगीत में कौन–कौन सी स्वरलिपि पद्वति है।
3. पंडित भातखण्डे जी द्वारा निर्मित स्वरलिपि पद्वति का वर्णन करें।

पाश्चात्य स्टाफ स्वरलिपि पद्धति

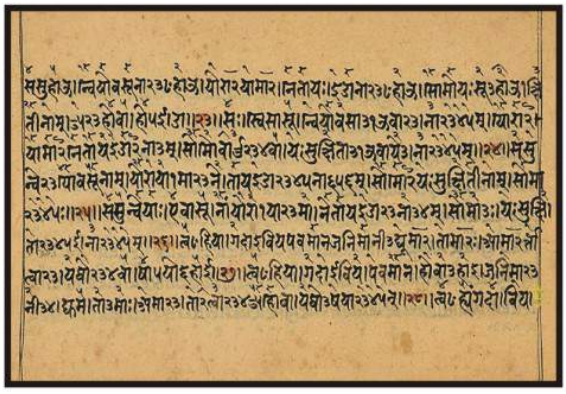

वैदिक कालीन स्वरलिपि पद्धति